JANUARY TO MARCH 2018-19

आगामी तीन माह की प्रस्तावित गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	सोयाबीन+ अरहर+ चना	-------	मल्टी क्राप प्लांटर का आकलन	1.0	05
2.	गन्ना	सी.ओ. 86032	गन्ने के कालुवा कण्डवा रोग नियंत्रण हेतु रासायनिक बीज उपचार का आकलन	0.8	04
3.	मछली	रोहू, कतला, मृगल	ग्रामीण तालाब में मत्स्य बीज उत्पादन का आकलन	0.5	04
4.	मछली	रोहू, कतला, मृगल	ग्रामीण तालाब में मत्स्य उत्पादन मे [illegible] के प्रयोग का आकलन	0.5	04
5.	विविध	------	समन्वित कृषि प्रणाली का आकलन	2.0	05
6.	-----	------	मृदा स्वास्थ्य कार्ड आधारित उर्वरक प्रयोग की जानकारी एवं अनुप्रयोग का आकलन	1.0	05
7.	गन्ना+प्याज	सी.ओ. 86032	गन्ना+प्याज अंतवर्तीय खेती का आकलन	0.8	04
8.	चना	जे.जी. 14	चने मे रासायनिक खरपतवार प्रबंधन का आकलन	0.8	04
9.	गन्ना	सी.ओ. 86032	गन्ना बुआई यंत्र से गन्ना बोने का आकलन	1.0	05
10.	धान एवं गन्ना		ट्राइकोडर्मा से फसल अवशेष अपघटन का आकलन		10
11.	चना	जे.जी. 14	चौड़ी क्यारी एवं मादाविधि से चना बुआई का आकलन	1.0	05
12.	----	----	जैव अवशेष अपघटक द्वारा मृदा स्वास्थ्य सुधार का आकलन	-	04
13.	सब्जी एवं फल	---	पोषण वाटिका का आकलन	-	04
योग				9.4	63

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	गन्ना	सी.ओ. 86032	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
2.	गन्ना	सी.ओ. 86032	गन्ने के लाल सड़न रोग नियंत्रण हेतु रासायनिक बीज उपचार का आकलन	5.0	12
3.	चना	जे.जी. 14	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
4.	गेहूं	जी.डब्लयु. 366	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
5.	तिवड़ा	प्रतीक	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5.0	12
6.	प्याज	-	रबी प्याज का प्रदर्शन	1.0	06
7.	धनीया	जवाहर धनीया 1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	1.0	06
8.	गेंहू	जी.डब्लयु. 366	स्वचलित रिपर से गेंहू कटाई का प्रदर्शन	5.0	13
9.	गेंहू	जी.डब्लयु. 366	सिड कम फर्टीलाइजर ड्रील से गेंहू की कतार बोवाई का प्रदर्शन	5.0	13
10.	चना	जे.जी. 14	समन्वित कीटप्रबंधन का प्रदर्शन	5.0	12
11.	चना	जे.जी. 14	चने के कालर राट रोग का ट्राइकोडर्मा विर्डी से प्रबंधन का प्रदर्शन	5.0	12
12.	मशरूम	आयस्टर	आयस्टर मशरूम उत्पादन का प्रदर्शन		12
योग				47.0	134

समूह फसल प्रदर्शन

क्र.	फसल	किस्म	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (है.)	लाभार्थी
1.	अरहर	राजीवलोचन	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	50	125
2.	चना	जे. जी. 14	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	50	125
3.	अलसी	आर.एल.सी. 92	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	10	25
योग				110	275

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	75
2.	पौध संरक्षण	4	1	80
3.	मृदा विज्ञान	4	1	50
4.	उद्यानिकी	4	1	80
5.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	70
योग		20	--	355

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिक का खेतो में भ्रमण	30	150
केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	250	500
योग	280	650

सीड हब योजनान्तर्गत बीजोत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)
1.	अरहर	राजीवलोचन	प्रमाणित एवं आधार	12
2.	चना	जे.जी.14 एवं आर.व्ही.जी. 202	प्रमाणित एवं आधार	88.2
योग				100.2

कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में बीजोत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित बीज का प्रकार	रकबा (हे.)
1.	अरहर	राजीवलोचन	आधार	2.0
2.	चना	आर.व्ही.जी. 202	आधार	2.0
3.	उड़द	इन्दिरा उड़द ।	प्रजनक	1.0
4.	मुंग	पैरी मुंग	प्रजनक	1.0
5.	तिवड़ा	महा तिवड़ा	प्रजनक	2.0
योग				8.0

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ....
....
....

उन्नत कृषि — समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-1 — त्रैमासिक पत्रिका, जनवरी, फरवरी, मार्च 2019 — वर्ष-12

संपादक मंडल

संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक : डॉ. ए.एल. राठौर
निदेशक विस्तार सेवाएँ, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
निर्देशक- ICAR-ATARI
जोन-9 जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

संपादक : श्री बी.एस. परिहार
विषय वस्तु विषेशज्ञ
सस्य विज्ञान

सह संपादक :
इं.टी.एस.सोनवानी
विषय वस्तु विषेशज्ञ
कृषि अभियांत्रिकी
श्रीमति राजेश्वरी साहू
विषय वस्तु विषेशज्ञ
उद्यानिकी
श्री पी.के.सिन्हा
प्रक्षेत्र प्रबंधक
श्री वाई.के. कौशिक
कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

रावे छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया

भोरमदेव कृषि महाविद्यालय, कवर्धा के रावे छात्र–छात्रा दिनांक 08–12 अक्टूबर 2018 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में संलग्न रहे। इस दौरान छात्रों को कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रमुख गतिविधियों की जानकारी दी गई। कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा प्रगतिशील कृषकों के प्रक्षेत्र पर छात्रों को भ्रमण कराया गया।

महिला किसान दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 15 अक्टूबर 2018 को महिला किसान दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में महिलाओं की कृषि में भागीदारी पर विस्तार से प्रकाश डाला गया तथा कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं को कृषि एवं कृषि संबंधी उद्यमों की जानकारी दी गई। महिला कृषकों से अपील की गई कि वे सभी उन्नत तकनीकों एवं उद्यमों को अपनायें। इस अवसर पर ग्राम नेवारी के लगभग 50 महिला कृषक उपस्थित रहे।

छः दिवसीय नर्सरी प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान हैदराबाद के सहयोग से नर्सरी प्रबंधन पर छः दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 22 से 27 अक्टूबर तक संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिले के चयनित युवाओं को नर्सरी प्रबंधन पर प्रशिक्षण दिया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य नर्सरी प्रबंधन के माध्यम से कृषिरत कृषकों, महिलाओं एवं युवाओं की आय में वृद्धि करना है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत बागवानी फसलों के नर्सरी प्रबंधन की तकनीकी जानकारी, फसलों की जैविक खेती, नर्सरी में सिंचाई जल प्रबंधन, कीट एवं रोगों का प्रबंधन, मशरूम उत्पादन, उद्यानिको फसलों के प्रवर्धन का जीवंत प्रदर्शन, सब्जियों के जैविक बेड निर्माण का प्रदर्शन तथा शासकीय उद्यान नर्सरी, खूटूं का भ्रमण कराया गया। नर्सरी प्रबंधन के समस्त पहलुओं में उन्हे दक्ष बनाया गया ताकि भविष्य में इसे रोजगार के रूप में अपनाकर रोजगार बढा सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. बी.पी. त्रिपाठी एवं अधिष्ठाता, मात्स्यिकी महाविद्यालय, कवर्धा के डॉ. के. के. चौधरी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरण कर उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

सर्तकता जागरूकता सप्ताह 2018 पर शपथ दिलाई गई

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 29.10.2018 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2018 के अवसर पर शासन द्वारा भ्रष्टाचार मिटाओ नया भारत बनाओ विषय पर कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के अधिकारी/कर्मचारी एवं समूह प्रदर्शन के लगभग 25 कृषकों को भ्रष्टाचार मिटाने की शपथ दिलाई गई कि हम नीतिपरक कार्य पद्धतियों को बढ़ावा देंगे तथा ईमानदारी और सत्यनिष्ठा की संस्कृति को प्रोत्साहन देंगे. हम ना तो रिश्वत देंगे और ना ही रिश्वत लेंगे. हम पारदर्शिता जिम्मेदारी तथा निष्पक्षता पर आधारित निगमित सुशासन की प्रतिज्ञा करते है हम कार्यो के संचालन में सबद्ध कानूनो नियमावलियों तथा अनुपालन प्रकियाओं का पालन करेंगे। हम अपने सभी कर्मचारियों के लिए एक नीति सहिता अपनाएंगे. हम अपने कर्मचारियों को उनके कर्तव्यों के ईमानदार निष्पादन के लिए उनके कार्य से संबद्ध नियमो विनियमों आदि के बारे में सुग्राही बनाएंगे।

JANUARY TO MARCH 2018-19

माननीय कुलपति, डॉ. एस.के. पाटील, इं.गां.कृ.वि., रायपुर द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा का भ्रमण

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के माननीय कुलपति डॉ. एस. के. पाटील दिनांक 14.11.2018 को कबीरधाम जिले के दौरे पर रहें। माननीय कुलपति जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में समन्वित कृषि प्रणाली के विभिन्न घटक जैसे मछली सह बत्तख पालन, कड़कनाथ पालन, मशरूम उत्पादन, उन्नत गौ पालन इकाई का अवलोकन किया। कृषि विज्ञान केन्द्र,कवर्धा प्रक्षेत्र मे कॉप कैफेटेरिया में गेहू की 8 किस्म, चनें की 6 किस्म, अलसी की 4 किस्म, मटर एवं मूंग की 2–2 किस्म, सरसों एवं उड़द की 1–1 किस्मों का अवलोकन किया। माननीय कुलपति जी ने जैविक खेती को बढ़ावा देने एवं कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में 5 एकड़ जमीन चिन्हांकित कर जैविक खेती करने तथा प्रक्षेत्र में लगभग 1 एकड़ में सब्जी की खेती का प्रदर्शन लगाने हेतु निर्देशित किया। बत्तख पालन को बढ़ावा देने हेतु निर्देशित किया। कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में ड्रिप में चने की खेती हेतु की जा रही तैयारी का भी जायजा लिया एवं चना, उड़द, गेहूं, मूंग,अरहर एवं तिवड़ा के बीजोत्पादन कार्यकम एवं मातृ बगीचा का अवलोकन किया। इस दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका "इंदिरा किसान मितान" का विमोचन माननीय कुलपति के द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. ए.एल. राठौर, निदेशक विस्तार सेवाएं, इं.गां.कृ.वि.,रायपुर, डॉ. आर.के. वाजपेयी, निदेशक अनुसंधान सेवाएं, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, डॉ. वी.के. त्रिपाठी, सहायक संचालक अनुसंधान, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, डॉ. आर. के. द्विवेदी, अधिष्ठाता, संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा, डॉ. बी.पी. त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

विश्व मृदा दिवस सह कृषक संगोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द एवं कृषि विभाग, जिला कबीरधाम के संयुक्त तत्वाधान में विश्व मृदा दिवस सह कृषक संगोष्ठी का आयोजन 5.12.2018 को किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय श्री सुरेश चंद्रवंशी, सदस्य प्रबंध मंडल, इं. गां. कृ. वि. रायपुर, अध्यक्षता डॉ आर के द्विवेदी, अधिष्ठाता, संत कबीर कृषि महाविद्यालय, कवर्धा विशिष्ट अतिथि डॉ के के चौधरी अधिष्ठाता, मात्स्यिकी महाविद्यालय, कवर्धा उपस्थित रहे ।कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ बी पी त्रिपाठी ने कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों एवं मृदा दिवस की महत्व के संबध में अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि डॉ के के चौधरी ने उपस्थित कृषकों को संबोधित करते हुए मृदा स्वास्थ्य सुधार हेतु गौ पालन को बढावा देने तथा जैविक खादों के उपयोग को बढावा देने की जरुरत बताई। उन्होने मछली पालन में मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री एन एल पाण्डेय, उप संचालक, कृषि, जिला कबीरधाम ने मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना एवं विभागीय योजनाओं की विस्त्त जानकारी तथा जैविक खेती की आवश्यकता पर प्रकाश डाला ।कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ आर के द्विवेदी, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, कवर्धा ने मृदा स्वास्थ्य का फसल उत्पादन पर पडने वाले प्रभाव तथा बेतरतीब उर्वरक एवं कीटनाशक उपयोग का होने वाले दुश्प्रभाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी। मुख्य अतिथि श्री सुरेश चंद्रवंशी ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि रसायन रहित खेती से ही आने वाली पीढी को उत्तम भोजन उपलब्ध हो पायेगा तथा जिन फसलों में उर्वरक आवश्यकता कम है तथा जिनमे कीट बिमारियों के प्रकोप कम हो उनकी खेती करने की सलाह दी। कंदीय फसल जिमीकंद की खेती को बढावा देने तथा धरती मॉ को विष रहित करने की अपील की। इस अवसर पर 150 किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया गया। इस अवसर पर लगभग 150 कृषक तथा कृषि विभाग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 16 दिसंबर 2018 से 31 दिसंबर 2018 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े के दौरान कृषको को स्वच्छता शपथ दिलाई गई, सार्वजनिक स्थानों पर साफ–सफाई किया गया, कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी/कर्मचारी द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर की सफाई की गई एवं कृषकों को प्रक्षेत्र अपशिष्टों के उचित प्रबंधन हेतु कम्पोष्ट एवं वर्मी कम्पोष्ट की जानकारी प्रदान किया गया।

किसान दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 23 दिसंबर 2018 को किसान दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यकम में कृषकों के भूमिका एवं योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला गया तथा कार्यक्रम में उपस्थित कृषकों को कृषि की नवीनतम तकनीकों की जानकारी दी गई। कृषकों से अपील की गई कि वे सभी उन्नत तकनीकों एवं उद्यमों को अपनायें। इस अवसर पर लगभग 50 कृषक उपस्थित थे।

जनवरी

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- समय से बोये गेहूँ में 20-25 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें, किरीट जड़ अवस्था में नत्रजन डालें, एक माह बाद नींदा नियंत्रण करें।
- गन्ने की बुआई का कार्य पूर्ण करें।
- गन्ने की बुआई के समय बीजोपचार (टेबुकोनाजोल 0.01 प्रतिशत) को हिसाब से करें।
- चने में हल्की सिंचाई करें।
- चने में इल्ली नियंत्रण हेतु ट्राइजोफास 350 मि.ली. प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।
- चना, मटर, मसूर, सरसों , अलसी, में फूल आने के पूर्व सिंचाई करें कटुआ इल्ली के प्रकोप से रक्षा करें एवं असिंचित अवस्था में 2 प्रतिशत यूरिया घोल कीटनाशक के साथ ही छिड़काव करें।
- गन्ने की शीतकालीन फसल बढ़वार पर होती है अत: सिंचाई करना आवश्यक है।
- शीतकालीन गन्ने में नत्रजनयुक्त उर्वरक (यूरिया) का एक चौथाई भाग दें पकी हुई फसल की कटाई कर कारखाना अथवा बाजार भिजवाने की व्यवस्था करें, गुड़ बनाने का कार्य करें।

उद्यानिकी

- प्याज की फसल में नत्रजन की शेष आधी मात्रा देकर सिंचाई करें।
- प्याज में बैंगनी धब्बा रोग से बचाव के लिए ब्लाईटाक्स 50 या डायथेन एम - 45 नामक दवा का छिड़काव करें।
- टमाटर की फसल में अच्छी फलत के लिए लकड़ी लगाकर सहारा दें।
- आम के वृक्ष में चेपा कीट की रोकथाम के लिए ग्रीस का लेप मुख्य तनों पर जमीन से 1 मीटर की ऊँचाई तक करें।
- सब्जी फसलों में चूर्णी फंफूदी रोग से बचाव के लिए 0.1 प्रतिशत बाविस्टीन घोल का छिड़काव 15 दिन के अंतराल से दो बार करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों को लगाने हेतु बीज को प्लास्टिक की थैली में लगाकर पॉलीहऊस में रखें जिससे अंकुरण शीघ्र होगा।
- जनवरी माह में टमाटर के पौधों को रोपने से अप्रैल माह में फल मिलना शुरूहो जाता है जबकि इस समय बाजार मूल्य अधिक मिलेगा।

पशुपालन -

- पशुओं को पेट के कीड़ो की दवाई नियमित दें।
- दुधारू पशु के थनैला रोग से बचाव के उपाय करें।
- पशुओं का बिछावन समय-समय पर बदलवाते रहें।
- अधिक बरसीम खिलाने से पशु को अफरा हो सकता है, अफरा होने पर 500 ग्राम सरसों के तेल में 60 ग्राम तारपीन का तेल मिला कर दें।
- पशु के सम्पूर्ण विकास के लिए खनिज मिश्रण 50-60 ग्राम दें।

फरवरी

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- गन्ने की बुवाई उपरांत गुड़ाई के समय कार्टाफ हाइड्रोक्लोराईड 4 जी 7 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से नालियो मे छिड़काव करें।
- गन्ने में खरपतवार नियंत्रण हेतु खरपतवारनाशी ऐट्राजीन का छिड़काव करें।
- बसंतकालीन गन्ने की उन्नत किस्म का चुनाव कर बीजोपचार कर लें, खेतों में नाली बनाकर खाद एवं उर्वरक डालें, गन्नें के दो से तीन आंखों वाले टुकड़े लगायें।
- मूंग, मक्का, उड़द, सूर्यमुखी, मूंगफली, तिल, लोबिया एवं चारा फसलो की बुआई करें।
- गेहूँ एवं अन्य रबी फसलो में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, असिंचित अवस्था में 2-3 प्रतिशत यूरिया घोल का छिड़काव करें।
- बरसीम, जई, लूसर्न, मक्का आदि चारा फसलों में सिंचाई व अवस्थानुसार कटाई करें।
- जनवरी में बोई गई फसलों में सिंचाई व गुड़ाई करते रहें।
- तिवड़ा, मटर, चना की कटाई करें।

उद्यानिकी

- फलदार वृक्षों जैसे आम, आंवला, चीकू, कटहल आदि में फूल एवं फल आते समय सिंचाई बंद रखें।
- नये लगाये गये आम, अमरूद, आंवला, कटहल, चीकू, नीबू आदि पौधो में सिंचाई करें।
- आम का फुदका कीट एवं चूर्णी फफूदी से बचाव के लिए कार्बोरिल डस्ट 2 ग्राम और सल्फेक्स 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- फरवरी माह में केला एवं पपीता लगाने की तैयारी करें गोभीवर्गीय फसल में 750 मि.ली. मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी. दवा छिड़के।
- आलू की फसल खुदाई के पहले सिंचाई बंद कर देवें और जमीन से ऊपर पौधे की कटाई कर दें, इससे आलू के कंद पुष्ट होगें।
- अदरक, हल्दी एवं कंद वर्गीय फसलों की खुदाई करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों की बोआई एवं पहले से तैयार पौधों की रोपाई करें। भिण्ड़ी की बोआई करें, धनिया एवं सौंफ की फसल में चूर्णी फफूंद से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत सल्फेक्स का छिड़काव करें।
- इस माह भिण्डी, मिर्च तथा खीरे की बुआई करें।
- केला पपीता लगाने की तैयारी करें।

पशुपालन -

- गाय व भैंस के गर्मी में आने पर उत्तम नस्ल के सांड से समय पर गाभिन करवायें।
- ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखते हुए अन्य पशुओं से अलग रखें।
- नवजात बछड़े-बछड़ियों को अन्य परजीवी नाशक दवाई पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुठ्ठी बांध (फुल मिल्चिंग) कर निकालें।
- बरसीम व राई फसल की सही अवस्था पर चारे के लिए कटाई करते रहें।

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- चना, अलसी, तिवड़ा, मटर, राजमा, मसूर, एवं सरसों इत्यादि फसलों की कटाई कर ग्रीष्म कालीन फसलों हेतु खेत की तैयारी करें।
- चना कटाई उपरांत उचित भण्डारण करें।
- गन्ने की बुआई बीजोपचार के बाद करें।
- गन्ने की शरद कालीन फसल में हल्की मिट्टी चढ़ायें तथा सिंचाई करते रहें अग्र तना छेदक कीट प्रकोप से फसल बचाने हेतु फोरेट 10 जी, या कार्बोयूरान 3 जी दानेदार दवा का प्रयोग करें।
- गन्ने की बोआई मासांत तक सम्पन्न करें, बोने के 7-10 दिन बाद बैल चलित हो द्वारा गुड़ाई करने से अंकुरण अच्छा होता है।
- गन्ने की पेड़ी फसल में उर्वरक व सिंचाई दें, तथा कीट प्रकोप होने पर कीट नाशक का प्रयोग करें।
- देर से बोये गये गेहूँ में अंतिम सिंचाई दुग्धावस्था पर करें।
- ग्रीष्म कालीन फसलों मे गुड़ाई व सिंचाई 10-15 दिन के अंतर से करें।
- चारे की फसलों की बुवाई करें।

उद्यानिकी

- आम, चीकू में फल विकसित होने का समय है अत: इन वृक्षों में 8-10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों को कीड़ो से बचाव हेतु विष प्रपंच का प्रयोग करें या कार्बोरिल डस्ट का भुरकाव करें।
- टमाटर, बैंगर, मिर्च, भिण्डी आदि फसलों में निदाई- गुड़ाई कर सिंचाई करें।
- प्याज की तैयारी फसल की खुदाई से 10-15 दिन पहले पानी देना बंद कर दें एवं पत्तियों को जमीन की सतह सेझुका दें।
- प्रारंभ में गेंदा के तैयार पौध की खेत में रोपाई करें, ग्लैडियोलाई कंद की खुदाई कर ठंडे स्थानों पर भंडारण करें।
- नर्सरी में तैयार मेंथा पौध की रोपाई करें, बच के प्रकंदो की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।
- नीबू वर्गीय फलो को गिरने से बचाने के लिए 2,4 डी 10 मिली ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव फलो की आरंभिक अवस्था में करें।
- पपीते की नई फसल लगाने का प्रबंध करें।

पशुपालन -

- ब्याने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार से बचाने के लिए खनिज मिश्रण 50-60 ग्राम प्रतिदिन दें।
- पशु ब्याने के 1-2 घंटे के अंदर नवजात बछड़े-बछड़ियों को खीस अवश्य पिलायें।
- नवजात बछड़े- बछड़ियो को 10-15 दिन की आयु पर सींगरहित करवायें।
- पशुओं को संक्रामक रोगों के रोगरोधी टीको समय- समय पर अवश्य लगवाएं।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिए ज्वार एवं मक्का की बिजाई करें।